सहनशीलता

- ब्र.कु. दिलीप राजकुले,शांतिवन

कुम्हार तालाब से मिट्टी खोद कर लाता है। सुखाता है, उसे कूटता है, पीसता है व छानता है फिर उसमें पानी मिलाता है। तदोपरान्त रौंदता है, उसके बाद चाक पर रखकर घुमाता है। वो देवता, पशु, पक्षी, आदमी, जिसकी जैसी मूर्ति चाहता वैसी बनाता है। इसके अलावा वो मनचाहे बर्तन बनाता है। इतना सब कुछ सहन करने के बाद भी मिट्टी कुछ नहीं बोलती वो हमेशा कुम्हार की इच्छा को ही ऊपर रखती है। अपनी सहनशीलता के कारण ही वो एक सुन्दर आकृति में ढ़ल जाती है। कलाकृति, कलाकार की श्रेष्ठ सोच का परिणाम है। अगर आपको लगता है कि कुम्हार या कलाकार जीत गया तो यह आपकी भूल है। जब भी कोई कलाकृति को देखेगा तो नि:संदेह वो कलाकार की महिमा करेगा। परन्तु आपको पता होना चाहिए अगर मिट्टी ना होती तो प्रकृति की रचना उभर कर सामने कैसे आती? इसलिए जीत की खुशी कलाकार को नहीं होनी चाहिए बल्कि जिसके कारण उसने जीत पायी उसकी महिमा करनी चाहिए और सारा श्रेय उसे देना चाहिए। अन्तत: मिट्टी की ही जीत होती है। जिसने मिट्टी जैसी सहनशीलता पा ली, मिट्टी जैसा नम्र हो गया,उसकी सफलता में कोई सन्देह नहीं रह गया। सहनशीलता और धैर्य जीत के साथी हैं जबकि चोट मारने वाला हमेशा हारा है। लचक जीत है, कठोरता हमेशा टूटी है। एक व्यक्ति लोहार के पास गया। उसने देखा कि लोहार निहाई पर रखकर लोहे को हथौड़े से पीट रहा था। एक कोने में अनेकों हथौड़े टूटे पड़े थे। वह व्यक्ति बोला, निहाई तो एक ही है, हथौड़े कई टूटे हैं। लोहार ने बताया हथौड़े चोट करते हैं इसलिए टूटे हैं। निहाई चोट सहन करती है, उसके धैर्य व सहनशीलता के कारण उसका कुछ नहीं बिगड़ता है।

ज्ञानमार्ग में मनुष्य जितना आगे कदम बढ़ाता है, परीक्षाएं भी अनायास ही उतना उग्र रूप धारण करके उसके सामने आती हैं। ज्ञानी का धर्म ही है हर्षित रहते हुए उन्हें सहन करते जाना। इस समय जो मनुष्य जितना सहन करता है, भविष्य में उसकी प्रालब्ध भी उतनी ऊंची होती है। जब विपरीत परिस्थितियाँ अथवा आपदायें आती हैं तो वो हमारे पुरुषार्थ की परीक्षा है। वो हमेशा यह दर्शाती है कि आपका विश्वास अटल है या आप कहीं डगमग तो नहीं हो गये।

हर व्यक्ति चाहता है कि उसे अपने जीवन के प्रत्येक कर्म में सफ़लता मिले। सफ़लता के लिए सहनशीलता का गुण धारण करना ज़रूरी है। सहनशीलता एक मुख्य दिव्य गुण है जिसकी धारणा से बिगड़े हुए कार्य भी बन जाते हैं और जिसके अभाव से बने हुए कार्य भी बिगड़ जाते हैं। सहनशीलता ज्ञानी का मुख्य गुण है, क्योंकि धर्म-स्थापना में अनेक प्रकार के विघ्न अथवा आपदायें तो आती ही हैं, परन्तु उनके होते हुए भी परमार्थ-पथ पर वह टिक सकेगा जिसमें सहनशीलता का मुख्य गुण होगा। योग का लक्ष्य ही निन्दा-स्तुति, मान-अपमान इत्यादि में समचित्त रहना है। अत: जिस पुरुषार्थी में सहनशीलता का गुण नहीं होगा उसकी अवस्था अडोल-चित्त, धैर्यवत् अर्थात् योगयुक्त नहीं रह सकती।

ज्ञान-मार्ग में मनुष्य जितना आगे कदम बढ़ाता है, परीक्षाएं भी अनायास ही उतना उग्र रूप धारण करके उसके सामने आती हैं। ज्ञानी का धर्म ही है हर्षित रहते हुए उन्हें सहन करते जाना। इस समय जो मनुष्य जितना सहन करता है, भविष्य में उसकी प्रालब्ध भी उतनी ऊंची होती है। जब विपरीत परिस्थितियाँ अथवा आपदायें आती हैं तो वो हमारे पुरुषार्थ की परीक्षा है। वो हमेशा यह दर्शाती है कि आपका विश्वास अटल है या आप कहीं डगमग तो नहीं हो गये। सभी धर्म-स्थापकों और उनके सहायकों के सामने बहुत सारे विघ्न व समस्याएँ आयीं और उन्होंने उसका दृढ़ता से सामना भी किया। क्योंकि पवित्रता स्थापन करने वालों पर आपदायें आना मानों इस अद्भुत सृष्टि-लीला का अनादि नियम है। इसलिये सृष्टि-लीला के इस रहस्ययुक्त नियम को जानकर घबराना नहीं चाहिये और हर्ष-शोक में नहीं आना चाहिये क्योंकि जितना- जितना कोई व्यक्ति इन परिस्थितियों को समचित्त होकर सहन करेगा उतनी-उतनी ही उसकी अवस्था परिपक्व होती जायेगी। जितनी अवस्था परिपक्व होगी,भविष्य में उसे स्वराज्य पद भी उतना ही शीघ्र प्राप्त होगा। आपदाओं, परिस्थितियों और प्रकृति के विघ्नों तथा बन्धनों को जीतने का यही तो फल है। जितना कोई व्यक्ति बड़ा ज्ञानी-योगी बनेगा, उसके मन के पुराने संस्कार और बाहरी विघ्न भी विकराल रूप धारण करके उसके सामने आते रहेंगे। परन्तु यदि सर्वशक्तिमान् परमात्मा के साथ उसका योग पूरा जुटा होगा तो उसको शक्ति भी पूरी मिलेगी। इस पुरुषार्थ के बाद तो प्रालब्ध काल में कभी कुछ सहन करना ही नहीं पड़ेगा, क्योंकि आख़िर विजय हो जाने पर तो प्रकृति भी दासी हो ही जायेगी। इसलिये सहनशील होकर चलते चलो, वर्ना पुरुषार्थ-पथ पर अन्त तक चल न सकोगे, क्योंकि अन्त में तो मानो परीक्षायें और ही इकट्ठी होकर पूरे ज़ोर से वार करने आयेंगी। इसलिये पहले से ही इस गुह्य तथ्य को जानकर अभी से अवस्था को दृढ़ करने और सहनशीलता के गुण की धारणा करने के अभ्यास पर ध्यान देना ही पुरुषार्थी का लक्ष्य होना चाहिए।

सहनशील व्यक्ति के मुख्य लक्षण

1.सहनशीलता के गुण को धारण करने वाले व्यक्ति के लक्षण ये हैं कि वह सन्तुष्ट दिखाई देगा। उनके नैन-चैन कभी भी असन्तुष्ट नहीं होंगे। जो सन्तुष्ट रहता है वही दूसरों को भी सन्तुष्ट कर सकता है। 2. जिस व्यक्ति में सहनशीलता होगी वह गम्भीर भी अवश्य होगा। जो गम्भीर है वह किसी भी कर्म या परिस्थिति में घबरायेगा नहीं बल्कि हर बात की गहराई में जाकर सफ़लता का साधन सोचकर उपाय करेगा और सफ़लता को प्राप्त करेगा। 3.सहनशील व्यक्ति के कर्मों से ऐसा अनुभव होगा कि जैसे मानो कोई फरिश्ता इस धरती पर चल-फिर रहा है। 4. जो सहनशील होंगे वह मनन शक्ति को प्राप्त कर सकते हैं। वह अन्दर ही अन्दर मनन करेगा और जो मनन करता है वह मगन रहता है। 5.सहनशीलता के गुण की धारणा से ईर्ष्या, द्वेष, क्रोध, अहंकार इत्यादि विकार खत्म हो जाते हैं और अन्तर्मुखता, निर्माणता, अडोलता इत्यादि कई अन्य दिव्य गुण-मूर्त दिखाई देगा और वह हर्षित मुख और लोक-प्रिय बन जायेगा जिससे हर कर्म में सफलता उसके पाँव चूमेगी। 6. सहनशीलता का गुण धारण करने वाला व्यक्ति ही इस सृष्टि-लीला को एक नाटक- समझता हुआ साक्षी होकर कार्य कर सकता है और 'बीती को बीती' समझ कर सृष्टि-ड्रामा की ढ़ाल को पकड़ सकता है।

सहनशीलता के गुण की गहराई में जाना ज़रूरी है क्योंकि इसकी धारणा से प्राप्त होने वाली शक्तियों के द्वारा मनुष्य का जीवन संवर जाता है, जिसमें स्वयं तथा समाज का कल्याण समाया हुआ होता है। जितना-जितना इस गुण की गहराई में जायेंगे उतना उसके मूल्य का पता पड़ेगा और जितना मूल्य का पता पड़ेगा उतना ही इस गुण को धारण करने का पुरुषार्थ करेंगे। पत्थर की मूर्ति भी पूजी तब जाती है जब वो पहले हथौड़े की चोट को झेलती है। अत: सहनशीलता द्वारा ही मनुष्य अपने मार्ग के अनेक कष्टों, विषमताओं, तूफ़ानों, आलोचनाओं इत्यादि को पार करता हुआ अपने लक्ष्य पर पहुँचता है, जहाँ विजय-श्री उसका स्वागत करती है। इसलिए सहनशीलता के गुण को धारण करने-करवाने के लिए बीसों नाखूनों का ज़ोर लगा कर तत्पर हो जाना चाहिए।

समर में घाव खाता जो, उसी का मान होता है। छिपा उस वेदन में भी, मधुर वरदान होता है।।

सृजन में झेलता जो चोट, छैनी और हथौड़ी की। वही पाषाण मन्दिर में, भगवान होता है।।

थकना नहीं, थमना नहीं, रूकना नहीं,झुकना नहीं! बस आगे ही बढ़ते जाना है।

क्योंकि पतझड़ के बाद बसन्त आना है।।

अहमदनगर। केन्द्रीय यातायात मंत्री नितिन गडकरी को गुलदस्ते द्वारा ''भगवान धरती पर आ चुके हैं'' का संदेश देते हुए ब्र.कु. राजेश्वरी व ब्र.कु. दीपक।

मंदसौर। चैतन्य देवियों की झाँकी का दर्शन करते हुए एम.पी.ई.बी. के जिला अधीक्षक कमलेश लाड, ब्र.कु.समिता तथा अन्य।

शिकागो-यू.एस.ए.। सीनियर सिटीज़न सेंटर में ''जीवन जीने की कला'' विषय पर प्रवचन करते हुए ब्र.कु. रोहित,वलसाड गुज.।

अलकापुरी-बड़ौदा। '7 अरब सत्कर्मों की महायोजना' का उद्घाटन करते हुए वडोदरा चेम्बर ऑफ कॉमर्स एंड इन्डस्ट्रीज़ के प्रमुख निलेश शुक्ल, ब्र.कु. रामप्रकाश, ब्र.कु. डॉ. निरंजना, ब्र.कु.मीना, आई.ओ.बी. के चीफ मैनेजर केवल जी, ब्र.कु. नरेन्द्र एवं जी.एस.एफ.सी. के रिटायर्ड सीनियर मैनेजर नंदु जी।

फरीदाबाद। गीता बाल निकेतन सी.से. स्कूल में ईश्वरीय संदेश देते हुए ब्र.कु. कौशल्या। साथ हैं प्रधानाचार्या रेणू सूद व अन्य टीचर्स।

झाँसी-हँसारी। 'परमात्म शक्ति द्वारा विश्व महापरिवर्तन का समय' कार्यक्रम का दीप प्रज्वलन कर शुभारंभ करते हुए राजीव कटियार,ए.आर.एन., आर.एस. चौधरी,(वित्त), विनोद सचान, केन्द्र प्रभारी बस डिपो, ब्र.कु. प्रतिभा, तथा ब्र.कु. रामकुमार।